Peer Reviewed/ Refereed Research Journal, Vol. 7, Issue-1 Jan - June - 2021 ISSN 2454-3950

''वर्तमान भारतीय परिपेक्ष्य में प्राथमिक शिक्षा प्रणाली में गोपाल कृष्ण गोखले के शैक्षिक विचारों का समीक्षात्मक अध्ययन''

डॉ. मीना शर्मा
असिस्टेंट प्रोफेसर
बीकॉन इंस्टीट्यूट ऑफ टैक्नोलॉजी, मेरठ (उ.प्र.)

सारांशिका

प्राथमिक शिक्षा भारतीय शिक्षा व्यवस्था की नींव है, व्यक्तित्व निमार्ण का आधार है। जिस प्रकार बालक के विकासक्रम में शैशवास्था का अत्याधिक महत्व होता है, उसी प्रकार शिक्षा के औपचारिक क्रम में प्राथमिक शिक्षा का महत्व होता है। इसकों सार्वजनिक एवं सर्वव्यापक बनाने के लिए स्वतन्त्रता के पूर्व से ही अनेक प्रयास किए गए, स्वतन्त्रता से पूर्व सर्वप्रथम प्रयास गोपाल कृष्ण गोखले का था, जिन्होंने राष्ट्रवाद के सन्दर्भ में प्राथमिक शिक्षा को अनिवार्य बताया और ब्रिटिश संसद के समक्ष अनेक तर्क दिए, परन्तु अल्पायु जीवन के कारण उनका संघर्ष अधूरा रह गया था। भारत सरकार ने 10 अप्रैल 2010 को 'शिक्षा का अधिकार' कानून लागू कर दिया है। प्रस्तुत शोध लेख में वर्तमान प्राथमिक शिक्षा प्रणाली में गोपाल कृष्ण गोखले के शैक्षिक विचारों का समीक्षात्मक अध्ययन करने का प्रयास किया गया है।

मुख्य शब्दः राष्ट्र निर्माण, राजनीतिक व्यवस्था, व्यवसायिक शिक्षा, चेतना,

प्रस्तावना

किसी भी देश की प्रगति जनसाधारण की शिक्षा पर निर्भर करती है। साधारणतया किसी देश के विकास में शिक्षा के अतिरिक्त अन्य कई कारण भी उसकी उन्नति में अपना योगदान करते हैं, फिर भी यदि देश का प्रत्येक नागरिक शिक्षित होगा, तो वह देश के प्रति अपने अधिकारों और कर्तव्यों के प्रति पूर्णतया सजग होगा, जिस प्रकार बालक के विकास क्रम में शैशवावस्था का अत्यधिक महत्व होता है, उसी प्रकार शिक्षा के औपचारिक क्रम में प्राथमिक शिक्षा का महत्व होता है। प्राथमिक शिक्षा, शिक्षा की नींव का पत्थर है, व्यक्तित्व निर्माण का आधार है। भारत में प्राथमिक शिक्षा का विकास प्राचीन काल से ही प्रारम्भ हो गया था। विभिन्न कालों में वैदिक काल, बौद्धकाल, मुगलकाल, ईसाई मिशनरी काल, कम्पनी शासन काल, ब्रिट्रिश शासन काल तथा स्वतन्त्र भारत में प्राथमिक शिक्षा का निरन्तर विकास होता रहा है।

प्राथमिक शिक्षा के विकास में महान विचारक गोपाल कृष्ण गोखले का स्थान अग्रणी रहा है। सन् 1857 में भारत में अंगेजों के विरूद्ध क्रान्ति हुयी, इस क्रान्ति का दमन करने के बाद 1858 में ब्रिट्रिश शासन स्थापित हो गया, भारतीय शिक्षा के समबन्ध में सुझाव देने के लिए हन्टर कमीशन की भी नियुक्ति की गई, देश में राष्ट्रीय आन्दोलन की लहर चल रही थी, राष्ट्रीय नेता अनिवार्य प्राथमिक शिक्षा की मांग कर रहे थे, इसी समय गोपाल कृष्ण गोखले का आर्विभाव हुआ। राष्ट्रीय भावनाओं से ओप प्रोत शिक्षा के मर्मज्ञ गोपाल कृष्ण गोखले का जन्म 9 मई सन् 1866 को बम्बई प्रान्त में रत्नगिरी जिले के कोटलक ग्राम में हुआ था। गोपाल कृष्ण गोखले के पिता का नाम कृष्णराव था, उनकी माता का नाम सत्यभाभा था। जो एक अनपढ़, परन्तु बुद्धिमान महिला थी उनकी स्मरण शक्ति असाधारण थी, उन्हें परम्परा तथा काव्यों का अच्छा ज्ञान था। घर के इस शुद्ध पवित्र वातावरण का प्रभाव गोखले के मस्तिष्क पर पड़ना स्वाभाविक था। गोपाल कृष्ण गोखले का सम्बन्ध एक मध्यवर्गीय परिवार से था। जिसका आदर्श था ''व्यर्थ न गँवाओं'' आवश्यकता नहीं पड़ेगी'' गोखले के विचारों में पाया जानने वाला संयम और मिताचार संभवतः उन्हें परिवार से विरासत में मिला था।

गोपाल कृष्ण गोखले ने प्राथमिक शिक्षा कागल में, माध्यमिक शिक्षा कोल्हापुर और उच्च शिक्षा पूना व बम्बई में प्राप्त की। उन्होंने 1881 में 15 वर्ष की आयु मे ंदसवीं की परीक्षा पास की। 1882 में प्रीवियस एफ0ए0 की परीक्षा राजाराम कालेज कोल्हापुर से और 1884 में बी0ए0 की परीक्षा एलफिन्सटन कालेज बम्बई से पास की।

गोपाल कृष्ण गोखले एक प्रखर शिक्षक और सम्पादक भी रहे है। उन्होंने अपने जीवन के बीस वर्ष शिक्षा जगत में व्यतीत किये थे। अतः उनका शिक्षा के प्रति अनुराग और उत्कृष्ट प्रेम होना स्वाभाविक था, वह एक मात्र शिक्षक ही नहीं, वरन् उन्होंने शिक्षा के विस्तार और विकास के कार्य में प्रचारक की भूमिका भी निभायी। भारत अज्ञानता के अंधकार में डूबा हुआ था। अनेक बुराइयाँ समाज में प्रचलित थी। भारत में एक सामान्य धर्म के अभाव में धर्म के आधार पर राष्ट्रीय एकता सम्भव नहीं थी। बाल विवाह प्रथा ने भारतीय सामाजिक दशा को दूषित कर रखा था। बाल विवाह इस समय समाज में घुन की तरह काम कर रहा था। इसके प्रचलित होने के काई कारण थे। दहेज प्रथा जैसी बुराई भी इसके प्रचलन में सहायक थी।

भारत पूरी तरह निरक्षर था, उन व्यक्तियों की सख्या जिन्होने किसी भी प्रकार की शिक्षा प्राप्त की थी, बहुत ही कम थी। अंग्रेजों ने भी प्रारम्भ में इस ओर ध्यान नहीं दिया। शिक्षा के प्रसार में बाधा पहुंचाने वाले कई कारण थे। विद्यालयों की संख्या बहुत ही कम थी, उचित वेतनमान के अभाव में कोई व्यक्ति शिक्षक बनने के लिए उत्सुक नहीं था। बंगाल एवं बिहार में वर्नाकूलर शिक्षकों का वेतन तीन रूपये प्रतिमाह था, जो कि कलकत्ते के किसी घरेलू नौकर के पारिश्रामिक का आधा भी नहीं था, तथा उनके नैतिक व्यक्तित्व से प्रभावित नहीं होते थे। छात्रों को शिक्षकों के व्याख्यानों का अक्षरशः रटना पड़ता था। पाठ्यक्रम बहुत ही निम्न स्तर का था। यह पाठ्यक्रम शैक्षणिक दृष्टि से कम और साहित्यिक दृष्टि से अधिक था। अंग्रेजों के आगमन से पाश्चात्य शिक्षा, ज्ञान विज्ञान का भी प्रवेश ऐसे समय में भारतीय शिक्षा का स्वरूप इस पश्चिमी शिक्षा में बिल्कुल भिन्न था। भारतीय शिक्षा जो कुछ पुराणों में लिखा था, वहीं तक था। इसके विपरीत पाश्चात्य शिक्षा वैज्ञानिक, वस्तुपरक, आलोचनात्मक, बौद्धिक तथा युक्तिसंगत प्रक्रियाओं से परिपूर्ण थी। इसके अलावा भारत में शिक्षा कुछ चन्द वर्गो तक का विशेष हित समझी जाती थी। सन् 1880 में भारत की बढ़ती हुई अशिक्षितों की संख्या नहीं के बराबर थी। स्त्रियों को शिक्षा से वंचित रखा जाना उन्नीसवीं शताब्दी की प्रमुख बुराई थी। गोपाल कृष्ण गोखले ने तत्कालीन भारत की दशा को अत्यन्त शोचनीय बताते हुये विचार प्रतिपादित किये कि देश के नागरिकों, विशेषकर, युवकों में,

पवित्र विचारों के संचार के बिना देश की स्थिति में सुधार नहीं हो सकता। इसके लिए उन्होनें शिक्षा को ही प्रभावकारी माध्यम माना। शिक्षा द्वारा ही नागरिकों को योग्य और कुशल बनाया जा सकता है। उसमें चारित्रिक गुणों का विकास किया जा सकता है। गोपाल कृष्ण गोखले ने इम्पीरियल लेजिस्लेटिव काउन्सिल भाषण में कहा था ''शिक्षा के बिना व्यक्ति की कुशलता में वृद्धि'' बुद्धिमता के समान स्तर में वृद्धि और, समुदाय के बड़े भाग में चारित्रिक सुदृढ़ता को निश्चित नहीं किया जा सकता। उनका विचार था कि ऐसा नहीं कि लोग अपने बच्चों को शिक्षा देना अपना कर्तव्य नहीं समझते, बल्कि गरीबी की अधिकता होने के कारण वह इससे वंचित रह जाते है। अतः इस सम्बन्ध में गोपाल कृष्ण गोखले प्रथम विचारक थे, जिन्होनें सरकार को यह सुझाव दिया कि शिक्षा को विशेषकर प्राथमिक शिक्षा को निःशुल्क और अनिवार्य बना दिया जाए। जैसा कि उन्होनें इम्पीरियल लेजिस्लेटिव काउन्सिल प्रस्ताव पेश करते हुये विचार व्यक्त किये हैं यह काउन्सिल सिफारिश करती है कि सारे देश में प्राथमिक शिक्षा को निःशुल्क और अनिवार्य बनाने की दिशा में शुरूआत की जाये और एक सुनिश्चित प्रस्तावों की योजना बनाने के लिए सरकारी और गैर सरकारी सदस्यों के एक मिश्रित आयोग का गठन किया जाये। प्राथमिक शिक्षा की समस्या बताते हुये उन्होनें कहा कि प्रथम 10 में से 9 बच्चे अज्ञान के अंधकार में बड़े हो रहे है, 5 गांव में 4 ऐसे है जिनमें कोई विद्यालय नहीं है, बच्चे आवश्यक शिक्षा सुविधाओं से वंचित है। 1910 में गोपाल कृष्ण गोखले ने केन्द्रिय धारा सभा में अनिवार्य प्राथमिक शिक्षा के संदर्भ में एक प्रस्ताव रखा सरकार ने इस प्रस्ताव को स्वीकार नहीं किया, परन्तु उसकी ओर सुधार करने का आश्वासन अवश्य दिया परन्तु सरकार के उदासीन दृष्टिकोण के फलस्वरूप 1911 में गोखले ने इस केन्द्रिय सभा में विधेयक के रूप में प्रस्तत किया, यह विधेयक भी पास नहीं हुआ, परन्तु इससे देश में प्राथमिक शिक्षा कों अनिवार्य करने हेतु एक मूहिम शुरू हो गयी। शिक्षा के सम्बन्ध में गोखले का विचार था कि शिक्षा को प्रान्तों का विषय न मानकर इसे केन्द्रिय विषयों में शामिल कर लिया जाये, क्योंकि धन के अभाव में प्रांत शिक्षा का भार वहन करने की स्थिति में नहीं है, उनका मत था कि आरम्भ में केवल बालकों के लिए अनिवार्य शिक्षा व्यवस्था का प्रावधान किया जाये तथा धीरे–धीरे इसका विकास करके बालिकाओं को भी सम्मिलित किया जाये ।3

गोपाल कृष्ण गोखले ने अपने शिक्षा सम्बन्धी विचारों में पश्चिम शिक्षा का समर्थन किया है भारत में आधुनिक शिक्षा के विकास पर दृष्टिपात करते है तो ज्ञात होता है कि भारत में अंग्रेजी शिक्षा का प्रश्न 1757 से 1857 तक ब्रिटिश अधिकारियों के मध्य विचाराधीन व विवादग्रस्त रहा। लार्ड मैकाले का प्रतिवेदन भारत में अंग्रेजी शिक्षा के विकास की एक महत्वपूर्ण घटना थी। मैकाले की शिक्षा नीति के पीछे भी अपनी दृष्टि थी। मैकाले का विश्वास था कि आंग्ल साहित्य व विज्ञान से भारतीयों का एक ऐसा वर्ग तेयार होगा, जो कि कालान्तर में आंग्ल पद्धति की संस्थाओं की भारत में आवश्यकता का अनुभव करेगा। जैसा कि इन शब्दों से स्पष्ट होता है ''हमें इस समय एक ऐसा वर्ग पैदा करने में पूरी शक्ति लगा देनी चाहिए, जो हमारे और उन लाखों के बीच जिन पर हम शासन करते हैं, दुभाषिए का काम कर सके। ऐसे लोगों का एक वर्ग, जिनका रक्त रंग भारतीय हो, किन्तु जो रूचि, विचारों, नैतिकता और बुद्धि की दृष्टि से अंग्रेज हो''। मैकाले की इस शिक्षा नीति के पीछे यह उद्देश्य भी था कि वह भारत के थोड़े से शिक्षित वर्ग को पूर्णतया पाश्चात्य परस्त बना लेना और इसी प्रक्रिया को जारी रखना था, ताकि भारतवासी भारतीयता को भूलकर सदा के लिए अंग्रेजों के दास बन जांए और ब्रिटिश शासकों में भारतीय प्रशासन के संचालन में निम्नतर पदों पर कार्य करने के लिए सस्ते बाबू लोग उपलब्ध हो सकें।

इस समय जो सामाजिक सांस्कृतिक पतन हो रहा था उस पतन को रोकने के लिए गोपाल कृष्ण गोखले शिक्षा में प्राथमिक शिक्षा की अनिवार्यता को अनुभव किया। अतः उन्होंने पाश्चात्य शिक्षा का पश्चिम के देशों के वैज्ञानिक एवं प्रचातांत्रिक विचारों के अभार के रूप में स्वागत किया। गोपाल कृष्ण गोखले ऐसे विचारक हुये हैं जो पश्चिम के चिंतन से प्रभावित रहे, परन्तु पश्चिम का अन्धानुकरण नहीं किया, लेकिन पश्चिम की अच्छाइयों की उपेक्षा भी नहीं की। यह स्वीकार करना होगा कि पाश्चात्य शिक्षा ने भारत में एक नए प्रकार के बौद्धिक और शैक्षिक जीवन की नींव डाली। गोपाल कृष्ण गोखले ने पश्चिमी प्रभाव से प्राचीन भारतीय संस्कृति को एक नवीन दृष्टि से देखा और नये विचारों तथा नये ज्ञान के प्रकाश में उसे नया सुन्दर रूप देने का प्रयास किया। निःसन्देह विदेशी शासन ने भारत के अतीत कालीन गौरव पर पर्दा डालने और उसकी छीछालेदी करने में कोई कसर नहीं छोड़ी और प्रत्येक संभव रूप में भारत का अपने हितों के लिए शोषण किया तथापि यह भी सच है कि पाश्चात्य चिंतन ने भारत में प्रशासनिक और शैक्षिक स्वरूप पर, सामाजिक मूल्यों पर अपनी क्रान्तिकारी छाप छोड़ी। पाश्चात्य सुधारवादी आन्दोलन ने भारत में नए और उन्नत सुधारों का सूत्रपात किया। पाश्चात्य बुद्धिवाद, उदावाद तथा पुर्नजागरण की लहरों से भारत का सामाजिक, आर्थिक शैक्षिक चिनतन अप्रत्याशित रूप से प्रभावित हुआ।

गोपाल कृष्ण गोखले ने पाश्चात्य शिक्षा का समर्थन करते हुये विचार व्यक्त किये कि पाश्चात्य शिक्षा उदार तथा लोकतांत्रिक विचारों से भरभूर है। अतः भारत में पाश्चात्य शिक्षा के विस्तार और विकास में उदार लोकतांत्रिक विचारों का विकास होगा। वह शिक्षा के माध्यम से भारतीयों को अज्ञानता, आडम्बर तथा अंधविश्वासों को दूर करना चाहते थे उन्होनें कहा शिक्षित जो आज सोचता है, शेष भारत कल सोचता है। राष्ट्रवाद के मार्ग में विभिन्न बाधाएं जैसे हिन्दू मुसलमान के मध्य मतभेद तथा अछूतवर्ग की शोचनीय स्थिति को शिक्षा के माध्यम से दूर करने का प्रयास किया।

शोध समस्या का उदय

वर्तमान भारतीय परिपेक्ष्य में प्राथमिक शिक्षा प्रणाली में जो कुछ भी हो रहा है 'निःशुल्क और अनिवार्य शिक्षा अधिनियम 2009' 6 से 14 वर्ष की आयु के सभी बच्चों को स्कूलों में निःशुल्क और अनिवार्य शिक्षा का मौलिक अधिकार के रूप में प्रावधान कियागया है। इस सन्दर्भ में गोपाल कृष्ण गोखले के प्राथमिक शिक्षा के सम्बन्धित विचार अग्रणी के रूप में सम्मुख आते हैं। इन सभी का यदि वास्तविक रूप में अवलोकन किया जाये तो स्पष्ट होता है कि गोखले का इस संदर्भ में सर्वप्रथम प्रयास था।

शोध अध्ययन का महत्व

आधुनिक युग में शिक्षा के प्रसार के लिए अथक प्रयास किए जा रहे है, क्योंकि शिक्षा के अभाव में किसी देश के उत्थान की कल्पना नहीं की जा सकती है। शिक्षा ही वह माध्यम है, जिससे एक स्वस्थ राष्ट्र का निर्माण किया जा सकता है। गोपाल कृष्ण गोखले एक ऐसे विचारक है जिन्होनें शिक्षा को राष्ट्र निर्माण का आधार बताया। देश की आर्थिक सामाजिक राजनीति, सुधार करने हेतु युवकों में पवित्र विचारों का समावेश प्रारम्भिक शिक्षा के माध्यम से किया जा सकता है। इस प्रकार गोखले के प्राथमिक शिक्षा सम्बन्धी विचार आज के संदर्भ में अत्यन्त ही मूल्यावान महत्वपूर्ण एवं उपादेय होंगे, क्योंकि वर्तमान अथवा भविष्य में अपने देश अथवा विश्व की शिक्षा व्यवस्था के निर्माण का दायित्व ग्रहण करना है।

शिक्षा का स्वरूप

गोखले प्राथमिक शिक्षा को राष्ट्र निर्माण की मूल आधार शिक्षा मानते थे। गोखले प्राथमिक, माध्यमिक, उच्च सभी वर्गो में प्राथमिक शिक्षा कों व्यक्ति के शारीरिक मानसिक बौद्धिक, आत्मिक विकास की प्रक्रिया मानते है। गोखले के विचारानुसार प्राथमिक शिक्षा, शिक्षा प्रारम्भ करने का प्रथम चरण है प्रथम चरण के विकास से ही अन्य चरणों का विकास भली प्रकार होगा। शिक्षा का विस्तार करना राष्ट्रीय कर्तव्य है। शिक्षा के द्वारा ही नैतिक विकास सम्भव हैं शिक्षा के द्वारा ही समाज में समाजिक व आर्थिक परिवर्तन लाये जा सकते है। अतः शिक्षा का स्वरूप आध्यात्मिक व नैतिक है।

शोध अध्ययन के उद्देश्य

राष्ट्र निर्माण के लिए प्राथमिक शिक्षा एक अनिवार्य तत्व और माध्यम है यही गोखले के शैक्षिक विचारों का सार है क्योंकि देश की आर्थिक, सामाजिक राजनीतिक सुधार हेतु शिक्षा ही एक साधन है, जिससे राष्ट्र के गौरव को प्रतिष्ठित किया जा सकता है। आज हमें ऐसे आदर्श मानव समाज की आवश्यकता है,जिसमें नैतिक मूल्यों का उत्थान हो, भ्रष्टाचार न हो, देश की एकता को कोई खतरा न हो, अतः शिक्षा का उद्देश्य वैज्ञानिक प्रगति के साथ साथ हमारे शाश्वत् मूल्यों की रक्षा करना होना चाहिए, इस दृष्टि से हमें गोखले की प्राथमिक शिक्षा–सम्बन्धी विचार ही हमारे समक्ष आते है जो इन उद्देश्य की पूर्ति करते है। उन्होनें प्राथमिक शिक्षा के माध्यम से समाज मे अंधविश्वास, सामाजिक कुरीतियाँ, अस्पृश्यता निर्धनता राजनीतिक दासता आदि को दूर करने का प्रयास किया। गोखले के शैक्षिक विचारों में प्राथमिक शिक्षा का स्वरूप, उद्देश्य, पाठ्यक्रम, शिक्षक पद्धति, शिक्षक–शिक्षार्थी सम्बन्ध, अनुशासन, जन शिक्षा, स्त्री शिक्षा आदि प्रमुख हैं।

अतः यह आवश्यक है कि वर्तमान समाज में जहां, साम्प्रदायिक दंगे, भाषावाद, क्षेत्रवाद, कहीं शैक्षिक असमानता, नैतिक एवं आध्यात्मिक मूल्यों में पतन आदि अनेक प्रकार के द्वन्द पूरे भारत में व्याप्त है ऐसी परिस्थितियों में गोखले के शिक्षा सम्बन्धी विचारों की अत्यन्त आवश्यकता हैं अतः गोखले के शिक्षा सम्बन्धी विचारों को वर्तमान ढांचे में परिवर्तन किया जा सकता है। इसी कारण वर्तमान समय में शोध की महती आवश्यकता है।

समस्या कथन

''वर्तमान भारतीय परिपेक्ष्य में प्राथमिक शिक्षा प्रणाली में गोपाल कृष्ण गोखले के शैक्षिक विचारों का समीक्षात्मक अध्ययन''

शोध विधि एवं प्रक्रिया

अध्ययन के उद्देश्यों साधनों एवं प्रकृतियो ंको दृष्टिगत रखते हुये अनुसंधान की ऐतिहासिक विधि का प्रयोग किया है। ऐतिहासिक अनुसंधान अतीत की घटनाओं, विकास क्रमों तथा अनुभवों का विशिष्ट अन्वेषण होता है जिससे अतीत से सम्बन्धित सूचनाओं के साधनों तथा प्राप्त संतुलित विवेचना की वैधता का सावधानीपूर्वक परीक्षण किया जाता है।

वर्तमान शोध की प्रकृति ऐसी है कि इसके अध्ययन के लिए अतीत की ओर जाना होगा। गोपाल कृष्ण गोखले से सम्बन्धित अध्ययन हेतु मूल रचनाऐं गोखले के जीवनकाल के समय में ही उपलब्ध होती, तदोपरान्त यद्यपि गोखले पर अन्य विद्धानों द्वारा रचित रचनाऐं उपलब्ध है जिनका प्रयोग गौण रचनाओं के रूप में किया। इस प्रकार अध्ययन की प्रक्रिया के अनुसार इस शोध के अध्ययन के लिए ऐतिहासिक शोध का प्रयोग किया है।

वर्तमान शोध के लिए मूल स्त्रोतों तथा गौण स्त्रोतों का प्रयोग किया।

1. मूल स्त्रोत– गोखले द्वारा लिखित मूलग्रन्थ
2. गौण स्त्रोत– गोखले से संबंधित अन्य लेखकों के ग्रन्थ।

विशिष्ट प्रत्ययों की व्याख्या

मुख्य उद्देश्य गोपाल कृष्ण गोखले के शैक्षिक विचारों को अध्ययन करना है और किसी महान विचारक की समकालीन परिस्थितियों उसके विचारों का निर्माण करती है। समस्या में प्रयुक्त शब्दावली को परिभाषित करना तथा वर्तमान परिपेक्ष्य में उसकी आवश्यकता को सिद्ध करना महत्वपूर्ण कार्य है। प्रस्तुत समस्या को निम्न शब्दावली द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है।

अध्ययन की परिसीमाएं :–

अध्ययन का स्वरूप साधारणतया अधिक व्यापक होता है शोध समस्या का व्यवहारिक रूप में अध्ययन करने के लिए सीमांकन करना आवश्यक होता है। अतः प्रस्तुत शोध अध्ययन की परिसीमायें निम्नांकित है।

1. गोपाल कृष्ण गोखले द्वारा लिखित मूल गन्थों व तत्सम्बन्धी सहायक ग्रन्थों को ही अध्ययन में प्रयुक्त किया।
2. गोपाल कृष्ण गोखले के जीवन व उनके कार्यों के विषय में विभिन्न भाषाओं में रचित पुस्तकों के हिन्दी व अंग्रेजी अनुवाद ही अध्ययन में प्रयुक्त किया है। अन्य किसी विदेशी भाषा का प्रयोग नहीं किया।
3. गोखले द्वारा अतीत में उनके द्वारा प्रणीत रचनाओं तथा उनके शैक्षिक विचारों पर आधारित लेखकों के ग्रन्थों के संग्रह एवं पत्र पत्रिकाओं पर आधारित पुस्तकीय सूचनाओं को ही प्रमाण मानकर अध्ययन किया है।

शोध समस्या का स्वरूप व्यावहारिक है, एवं शोध परिणाम भी इन्हीं सीमाओं में सुनिश्चित हैं।

संदर्भ सूची

गांधी एम.के. (1955) :
गोखले माई पॉलिटिक्ल गुरू,
नवजीवनपब्लिशिंग हाउस अहमदाबाद।
कुजंरू पण्डित हृदय नाथ (1966) :
जी. के. गोखले द मैन गण्ड हिज मिशन, महाराष्ट्र परिचय केन्द्र,
नई दिल्ली।
कीलेसकर एम. (1902) :
रीलिजियस एण्ड सोशल रिफोमर्स ए कलेक्शन
ऑफ एक्सेज एण्ड स्पीचिज बाई महादेव गोविन्द रानाडे, गोपाल नारायण एण्ड क. बॉम्बे।
ग्रोवर विरेन्द्र एड. (1991) :
गोपाल कृष्ण गोखले, दीप एण्ड दीप पब्लिकेशन, नई दिल्ली।
चर्तुवेदी अवधेश कुमार (1999) :
गोपाल कृष्ण गोखले, भारतीय ग्रन्थ।
देवगिरीकर टी.आर. (1964) :
गोपाल कृष्ण गोखले, पब्लिकेशन, डीविजन, गर्वनमैन्ट ऑफ इण्डिया, नई दिल्ली।
नेतसन जी.ए. (1916) :
स्पीचिज ऑफ गोपाल कृष्ण गोखले, सेकिण्ड एडीशन मद्रास।